प्रतिष्ठित, समान रूपेँ पूजित। कहबाक तात्पर्य जे समाजमध्य जेँ छुआछूतक व्यवहार कइओ छलो, तँ देवी-देवता ताहिसँ ऊपर रहलाह, सब जातिक हेतु समान रूपेँ पूज्य रहलाह। प्रायः एही देवी-देवताक बलेँ समाजमध्य पसरल ऊँच-नीचक भाव विकराल रूप धारण नहि कए सकल, समाजमध्य जातिय विस्फोटकेँ बचा सकल।

देखल जाइत रहल अछि जे बौद्धिक साहित्यक एक पृथक् वर्ग रहल अछि, जनिक प्रवृत्ति अपनहिमे सीमित रहब छल। अतएव एहन विचार जन-साधारण तक पहुँचि नहि सकल। परञ्च एकर विपरित लोकसाहित्यक निर्माण छदमरूपेँ बिना कोनो आर्थिक लाभक होइत रहल। नाना तरह गीत, कथा, फकड़ा आदि प्रचलित होइत रहल, जे ठाम-कुठाम समाजकेँ प्रभावित करैत रहल। कहि सकैत छी जे लोकसाहित्यक उमर तन्तुक नीति एकरा समकालिन सामाजिक यथार्थसँ जोड़ैत रहल

लोकसाहित्यक समाजशास्त्रीय अध्ययनसँ ई प्राप्त होइछ जे एकर वास्तविक मूल्य एहि बातमे नहि अछि जे एकर संबंध कोनो व्यक्ति विशेष वा घटनासँ होइछ, एकर महत्व ओहि स्थिति, भूमिका, सम्बन्ध ओ दृष्टिकोणमे अछि जेकर बेरि-बेरि चित्रण कएल जाइछ। कतेको ठाम एकोटा सामाजिक तथ्यक विविध ओ परस्पर विरोधी चित्रण सेहो भेटैछ।

ग्रामीण जीवनमध्य संयुक्त परिवार-प्रणाली लोकसाहित्यकेँ प्रचुर सामग्री प्रदान करैत रहल अछि। सासु-बहु होथि वा ननदि-भाउज, पति-पत्नी होथि वा माँ-बेटा आदिक बीच तनाव-मिलनक बहुतो चित्र लोकगीतमे निबद्ध होइत रहल अछि। एतबे नहि, एहिमे विभिन्न तरहक उलहन-आरोप सेहो देखबामे अबैछ, से चाहे प्रकृतिसँ हो वा देवी-देवतासँ। जगज्जननी सीता जंगलमे मात्र सन्देहक बल पर निष्कासित कए देल गेलीह जखन ओ गर्भवती छलीह। निष्कासिते अवस्थामे दू पुत्रकेँ जन्म देलनि, आन-आन संबंधीकेँ एकर सूचना देलनि मुदा पति रामकेँ सूचना नहि देबाक बात करैत छथि। एहिना एक 'सोहर' मे कहल गेल जे बन्धन जकरा हम दुनू गोटए मीलि बान्हल, तकरा खोलबाक समयमे मात्र हमहीं किएक? एहिमे प्रकृतिक प्रति उलहन भाव दृष्टिगोचर होइछ। अपन प्रियतम परमात्माक खोजमे संकल्प लए चललनि हरि एक नव कनियाँ 'समदाउन'क माध्यमे

प्रकृतिक कल्पित कथाक रूपमे मानल तँ जे. जी. फ्रेजर एकरा आदिकालिन आ लोकप्रचलित लोकवृत्तक अन्योन्याश्रित एवं पारस्परिक व्याख्यापरक तुलनात्मक अध्ययन कएल। कहबाक तात्पर्य जे लोकसाहित्य वा लोकवृत्त समाजशास्त्रीय आधार सामग्रीक माध्यम थीक, जकर अध्ययन बिना समाजक स्थायी चित्र बनाएब असम्भव।

मौखिक परम्परामे निबद्ध वैविध्यपूर्ण लोकगीत, लघु लोकगाथासँ लए 'आल्हा' सनहन वृहत् लोककाव्य, खिस्सा-पिहानी, फकड़ा-बुझौअलि, बालगीत, स्मृतिसहायक सूत्र, मोहनी-उच्चाटन मंत्र आदि भेटैत अछि। जखन एसब खेत-खरिहान वा बजारमे भसल रहैत थीक, पावनि-मेला-यात्रामे लागल रहैत थीक, मुण्डन-उपनयनादि संस्कारकेँ सम्पन्न करबामे भीड़ल रहैत थीक — सबतरि-सबठाम स्फुरित भए उठैत अछि लौकिकता। लोकसाहित्यक सम्बन्ध समाजक सब वर्गसँ रहैछ। कोन एहन बच्चा अछि जे माए-दाइक कोरामे लोरी सुनने बिना पैघ भेल हो? के एहन व्यक्ति छथि जे लोकगीतक सहयोगक बिना संस्कारित भेल होथि? एहिमे स्त्री-पुरुषमे कतहु कोनो अन्तर नहि अछि, कहइ तँ संकेत थीक जे स्त्रीगण लोकनिक सम्बन्ध किछु बेसिये छनि। कारण जे लोकगीतक तँ प्राय: ओएह सब माध्यम होइत छथि, हुनके लोकनिक जिह्वा पर एकर वास छैक ए्तबे किएक! 'लगनी'मे भास के लगबैछ, 'सोहर'क तान के छोड़ैछ, 'समदाउन'क द्वारा कारुणिक दृश्यक अवतरण के करैछ — सबटा एसभ-अहाँक प्रतिरूपक स्त्रीगणेक माध्यमे सम्भव। लोककथा कहनिहार पुरुष वर्गेँ आँगुर पर गनबा योग्य छथि, मुदा दादी-नानीसँ बिना खिस्सा सुनने के पैघ भेल छथि? की! आदरणीय हरिमोहन झाजीक 'अलंकार शिक्षा' स्त्रीगणलोकनिक मनो-मुग्धकारी फकड़ाक बिना सम्भव भए सकैत छल? नहि, किन्नहु नहि। लोकगीत होवा लोककथा, फकड़ा हो वा बुझौअलि आदि स्त्रीगणे लोकनिक द्वारा रचैत-बसैत अछि।

लोकसाहित्यक श्रेष्ठ पक्षसँ तथाकथित निम्न जातिक लोको वंचित नहि छथि। परम तत्त्वसँ सम्बन्ध रखनिहार निर्गुण प्राय: चमार जातिक लोकद्वारा गाओल जाइछ, जकरा उच्च जातिक लोक बहुत आदरक संग सुनैत छथि। 'अल्हा उदल' सन महाकाव्यीय गाथा हो वा 'डोमकछ' नाच, 'गरीबन भुइआ' सन चौबीस महत्वक देवता होथु वा 'गाडर देवी' सन मल्लाह जातिक लोकदेवी — सबतरि-सबठाम समान रूपेँ

समाज आ लोकसाहित्य

— x —

→ डॉ॰ अजीत मिश्र

जनजीवनक अव्यक्त भावना लोककण्ठसँ निःसृत भए जगभरिमे पसरि जाइछ। भावनाक एहि अनन्त लोककेँ केओ लिपिबद्ध नहि कए सकल अछि। एहि भाव-सम्पदाकेँ समग्र रूपेँ समेटबाक क्षमता ककरामे छैक? ओना लिपिबद्धताक अभावमे लोकवाणीसँ निर्मित लोकक अपना 'वाङ्मय' साहित्यमे अवश्य दृष्टिगोचर होइछ, ओहिमे आपृथ्वीपाल व्यष्टि-समष्टिक हित-चिन्ता निहित रहैछ। परञ्च ई साहित्य लेखनीक नोकसँ नहि, अपितु लोककण्ठसँ स्फूर्जित स्वर-लहरीक माध्यमे अपन अस्तित्व बनबैछ।

लोकसाहित्य आ समाजक बीचमे अन्योन्याश्रय सम्बन्ध अछि। एकक अभावमे दोसरक कल्पना करब व्यर्थ। एकजँ दोसरक प्राणवायु थी तँ दोसर ओकर श्वासनली, जकर माध्यमेँ प्रवेश कए ओ अपन कार्य करैछ, अपन रूप धरैछ, अपन भिन्न-भिन्न श्रृष्टि गढ़ैछ। लोकसाहित्य अपन प्रारम्भिक क्षणमे, जखन अधिकांश जनता निरक्षर छल, मौखिक परम्पराइ द्वारा अपन ज्ञान, विचार ओ भावनाकेँ संचारित करैत छल। सामाजिक प्रक्रियाक एक अति महत्वपूर्ण अंग होएबाक कारणेँ ई सबहक ध्यान आकर्षित कएलक, कारण जे एकर विषयवस्तु सब समाज-सापेक्ष छल।

अंगरेजीक 'फोक' [Folk] शब्द भारतीय साहित्यमे 'लोक' क रूप धारण कए जग जाहिर भेल। भारतीय वाङ्मयक हेतु ई अत्यन्त प्राचीन शब्द अछि। आचार्य पतञ्जलि शब्दक दु रूप मानल अछि – लौकिक एवं वैदिक। एहि 'लौकिक' शब्दसँ तात्पर्य अछि सर्वजनमे व्याप्त अर्थात् समाजक अभिन्न अंग। 'महाभारत' मे लिखल गेल अछि जे →

'सत्यात्मा भव राजेन्द्र सत्ये लोकाः प्रतिष्ठिताः।'

एहिप्रकारेँ 'लोक' शब्द जनसामान्यक हेतु आएल अछि। 'लोकवृत्त' [Folklore] शब्द 1846 ई॰ मे W. J. Thomas [1803-85] द्वारा गढ़ल गेल, मुदा जैकब ग्रिमकेँ एहि विषयक वैज्ञानिक अध्ययनक प्रवर्तक मानल जाइत छथि। मैक्समूलर एकरा

कहल अछि जे → 'फोरबइ हम अँखा चूड़ी, फोरबइ हम चोलिया,
से धरबइ जोगिनियाक भेस आरे सखिया'।

एतावता, मौखिक परम्पराक माध्यमें हमसब लोक प्रचलित धार्मिक विश्वास आ अनुष्ठानक अध्ययन करैत छी, एहिमे व्यापक आ वैविध्यपूर्ण धार्मिक ओ जादू-टोना संबंधी विश्वास आ प्रयोगक पता चलैछ। जतए मौखिक परम्पराकेँ माध्यमें 'परमतत्व'क वर्णन करनिहार 'निर्गुन' प्राप्त होइछ, ओतहि श्रुति पहुँची-निहार जादूई मंत्र सेहो। जनसाधारणक हृदयसँ आबद्ध रहबाक कारणेँ लोक-साहित्य पाठकक-श्रोताक धार्मिक भावकेँ छुबैत रहल अछि आ एही कारणेँ ओ दिग्-दिगन्तमे पसरैत रहल।

अस्तु, लोकसाहित्यक माध्यमें सामाजिक जीवनक सब पक्षक दर्शन करल जाए संकेत अछि, ओकर रूप-गुणसँ प्रभावित भेल जाए संकेत अछि, ओकर वैज्ञानिक अध्ययनक लेलँ मन-मानस पटल पर खाओल-बसाओल जाए संकेत अछि। लोक साहित्य लोकक संग घुरैत रहल अछि आ युग-युग धरि घुरैत रहत।

⇒ डॉ॰ अजीत मिश्र
मैथिली विभाग